छत्तीसगढ़ राज्य की कोंध जनजाति की लोक परम्पराएं

डॉ. प्रीती शर्मा*, गुलाब राम पटेल**

**प्राध्यापक समाजशास्त्र, **शोधार्थी, शा.दू.ब. महिला स्नात्कोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)*

सारांश

विश्व के लगभग सभी जनजातीय समाजों में सामाजिक संरचना एवं सामाजिक व्यवस्था के संचालन हेतु विशिष्ट प्रणाली विद्यमान है। जनजातीय समाजों में प्रथागत व्यवहारों का अनुपालन सभ्य समाजों की अपेक्षा अधिक कठोर रूप से किया जाता है। उनकी सामाजिक व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति का एक निष्चित स्थान होता है, तथा उसी के अनुरूप व्यक्ति को भूमिका का निर्वहन करना होता है। ये अपनी समस्याओं को परम्परा एवं प्रथानुसार समाधान भी करते है। आदिवासियों में लोक परम्परा आदिकाल से चली आ रही है। प्रत्येक आदिवासी समुदाय की लोक परम्पराओं में अपनी–अपनी विशेषताएं होती है। ये परम्परा सदियॉ पुरानी है, ये ही आदिवासी संस्कृति में निखार लाती है, आदिवासी संस्कृति कला, साहित्य, पोशाक, रंग, नृत्य, संगीत व्यवहार आदि विविध पक्षों से जुड़ी हुई होती है। इन सभी का लोक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है, और ये प्रभाव ही आदिवासी संस्कृति को रंगते गये, और विभिन्न छाप छोड़ते गये । जिन्हें प्रामाणिक माना जाता रहा है। इस दृष्टि से आदिवासी लोक परम्पराएं जीवन्त है। इनकी लोक परम्पराएं ऐतिहासिक और सामाजिक विरासत को केवल बनाए ही नही रखती, बल्कि समय और परिस्थिति के अनुरूप इसे स्पष्ट करने का भी कार्य करती है। लोक परम्पराएं अपनी सतत् निरन्तरता की प्रकृति के कारण सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने तथा समाज को संगठित बनाये रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ. प्रीती शर्मा,
गुलाब राम पटेल,
''छत्तीसगढ़ राज्य की कोंध जनजाति की लोक परम्पराएं'',
शोध मंथन जून 2017,
पेज सं0 136–143
http://anubooks.com/?page_id=2030
Artcile No.22(SM429)

प्रस्तावना

कोंध जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य में मुख्यतः महासमुन्द, रायगढ़, गरियाबंद एवं बलौदाबाजार जिलों के पहाड़ी क्षेत्रों में निवासरत है। जन सामान्य इनकों **''कोन्धन''** नाम से जानते है। इस समुदाय के लोग युद्ध कला में दक्ष थे। और **''कोंधी (कुई)''** बोली बोलते थे। इनकी लोक परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी समुदाय में स्वतः हस्तांतरित होती रहती है। समुदाय में बच्चे बड़े–बुजुगों को देख–देखकर सीख लेते है। कोंध समुदाय के प्रत्येक त्यौहारों, उत्सवों एवं विशिष्ट अवसरों में लोकगीतों एवं लोकनष्त्यों का विशेष महत्व होता है। यह समुदाय गीत व संगीत के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त करते है, और अपने आराध्य को प्रसन्न करने का प्रयास करते है।

2. अध्ययन का उद्देश्यः

प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के **कोंध जनजाति की लोक परम्पराओं** को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

3. अध्ययन पद्धतिः

प्रत्येक अध्ययन कुछ निश्चित उद्देश्यों के आधार पर किया जाता है। जिसकी पूर्ति के लिए योजनाबद्ध रूप से शोध कार्य करना होता है। प्रस्तुत अध्ययन **''कोंध जनजाति की लोक परम्पराएं''**पर आधारित है। अतः अध्ययन का प्रारूप **वर्णनात्मक** है।

3.1 अध्ययन क्षेत्र :

कोंध जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य में उड़ीसा राज्य के सीमावर्ती जिलों में निवासरत है।अतः राज्य के रायगढ़, महासमुन्द, गरियाबंद एवं बलौदाबाजार जिलों के सात विकासखण्डों के विभिन्न ग्रामोंमें अध्ययन किया गया है।

3.2 तथ्य संकलन के स्त्रोत एवं उपकरण

अध्ययन में प्राथमिक तथ्यों का संकलन **''अवलोकन एवं समूहवार्ता''** के माध्यम से किया गया है। शोधार्थी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत कोंध जनजाति का नृजातीय अध्ययन किया गया है।साथ ही विषय से संबंधित द्वितीयक तथ्यों का संकलन पत्र–पत्रिकाओं, इंटरनेट एवं शासकीय प्रतिवेदनों के माध्यम से भी किया गया है।

किसी समाज की उपादेयता, महत्व और प्रभाव उनकी परम्पराओं पर बहुत कुछ निर्भर करता है। लोक परम्पराएं कोंध समाज के सदस्यों और समूहों की अमूल्य विरासत है। इनकी लोक परम्परा समुदाय के प्रत्येक सदस्य के सामाजिक जीवन में एकरूपता लाती है। व्यक्ति के व्यवहारों को नियन्त्रित करती है। एवं सुरक्षा की भावना को प्रोत्साहित भी करती है। इनके प्रत्येक सदस्य सामाजिक निंदा एवं भय से लोक परम्पराओं को लांघने का साहस नहीं करते। लोक परम्परायें किसी व्यक्ति विशेष की नहीं होती, वह तो पूरे समुदाय की होती है। और उसके व्यवहार को निर्देशित व संचालित करता है। इसलिए प्रत्येक पीढ़ी के सदस्य विरासत में प्राप्त परम्पराओं पर गर्व करती है। उसकी रक्षा करती है। और उसे विरासत के रूप में आगामी पीढ़ी को सौपती है।

कोंध जनजाति के लोकगीत एवं नृत्य

कोंध जनजाति की मान्यतायें एवं परम्परायें अडिग है। कोंध समुदाय के लोग प्रत्येक

उत्सवों एवं त्यौहारों में लोकगीतों एव नृत्यों से के माध्यम से हर्षोउल्लास करते है। वे अपने आराध्य देवी–देवताओं को प्रसन्न करने, अपने पापों से मुक्ति एवं बुरी आत्माओं के प्रकोप से बचने के लिए स्तुति करते है। प्रयास किया जाता है, कि लोकगीतों की सुरों में एकरूपता एवं लोकनृत्यों में लयबद्धता बनी रहे। इस समुदाय में पाये जाने वाले लोकगीतों एवं नृत्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :–

करमागीत एवं नृत्य

यह लोकगीत एवं नृत्य आश्विन माह में एकादशी के दिन करम सेनी देवता की महिमा का गुणगान किया जाता है, इसका मुख्य उद्देश्य ग्राम की खुशहाली, फसलों की अच्छी पैदावार एवं बीमारियों से रक्षा आदि के लिए किया जाता है। यह उत्सव सात दिनों तक चलता है। इसमें करमा वृक्ष की डाल की पूजा कर उसको ग्राम के मध्य में गाड़ दिया जाता है। जिसके चारों ओर महिला–पुरूष ढ़ोल, मृदंग, मंजीरा आदि वाद्ययंत्रों के साथ सामूहिक नृत्य करते है। नृत्य गोलाकार, अर्द्ध चन्द्राकार एवं पंक्तिबद्ध किया जाता है। इनके करमा गीत की दो पंक्ति निम्नलिखित है :–

1. करम सेनी, करम सेनी हो,
तुइका बन्दो मैं कर जोड़।
करमा के एकादशी,
फूल फूटे बारामासी।
2. करम सेनी, करम सेनी,
उठो, उठो करम सेनी हो।
पहिगे बिहान, चलो जाबो,
गंगा स्थान, करम सेनी हो।

भावार्थ : 1. हे करम सेनी देव हम सब हाथ जोड़कर आपकी आराधना करते है, करमा की एकादशी (आश्विन माह के एकादशी) को बारह महीनो में एक बार फूल खिलने वाला फूल खिलता है। जिससे हम आपकी पूजा अर्चना करते है।

2. हे करम सेनी देव उठ जाएये सुबह हो गई है आज करमा का सातवां दिन है। और हम सब गंगा स्नान के लिए चलेगें, हे करमसेनी देव जाग जायें, सुबह हो गई है।

सुआ गीत एवं नृत्य

सुआ नृत्य हरियाली त्यौहार (सावन माह की अमावस्या) से शुरू होकर धान की बाली आने तक अच्छी फसल की कामना करते हुए मनाते हैं। इसमें महिलाएं ''दीया'' को जलाकर बांस की टोकरी में रखी है साथ ही धान की बालियाँ भी डालती है। अच्छी फसल की कामना करते हुए टोकरी के चारों ओर लय–ताल बद्ध नृत्य किया जाता है। इनके सुआगीत की चार पंक्ति निम्नलिखित हैः–

रनभना रनभना, पड़की परौना,

मृगो बोले आधी रात, मृगा बोली।
अति मीठा लागे, सुख सुते अधि,
सुख सुते सरो राता।

भावार्थः–पहाड़ जंगलों के पेड़–पौधो में पक्षियों का चहकना मधुर लग रहा है। आधी रात में हिरन की आवाज भी अति सुन्दर लगती है, इन मधुर आवाजों को सुन–सुन कर सब लोग सुखी–सुखी रात भर सोते है।

विवाहगीत एवं नृत्य

इस समुदाय में शादी–विवाह के समय प्रायः सभी महिला–पुरूष शराब पीकर मस्त हो जाते है, ढोल, झांझ, मंजीरा आदि वाद्ययंत्रों की थाप पर सामूहिक रूप से मंडप के नीचे विवाह गीत गाते हुए हर्षोल्लास से नृत्य गान करते है। इनके विवाह गीत निम्नलिखित हैः–

मंडवा चौपाटी, मंडवा चौपाटी
कोना रे मघनो–मघनो
मंडला उपरे खेलो खेलिमा
आमेह दुहे वरो कनिया

भावार्थः– शादी के लिए मंडप सज गया है, दूर–दूर से मेहमान आ रहे है, आओ सब आओ सब मंडप के नीचे नाचते–गाते है। हम दूल्हे के लिए कन्या (वधू) को लेने जाऐगें।

शैला गीत एवं नृत्य

शैलागीत एवं नृत्य फागुन माह में पुरूषों द्वारा होली त्यौहार तक किया जाता है। इस नृत्य में पुरूष हाथो में डंड़ा लेकर टोलियों में गोला बनाकर एक ताल में नाचते गाते मनोरंजन करते है।

चलो रे, चलो रे, चलो रे,
बलद मने, न करो गुनानी ।
खाई बु तु कनचा चारा,
पीईबू तू कोठा पानी।

भावार्थ :– मेरे बैलों जल्दी चलो, चलो चलो जल्दी चलो, कोई विचार मत करो, आलस मत करो, जल्दी काम समाप्त करो। घर वापस पहुँचने पर हरा घास खाने को मिलेगा और धान की भूसी मिली पानी पीने को मिलेगा, चलो जल्दी काम खत्म करो।

ददरिया गीत

ददरिया को लोकगीतों का राजा कहा जाता है, ददरिया गीतों में दो समूह होते है। जिसमें एक समूह द्वारा गीतों के माध्यम से प्रश्न करता है और दूसरा समूह गानों के माध्यम से ही उत्तर देता है, समुदाय द्वारा विभिन्न अवसरों एवं उत्सवों में ददरिया गीत का गायन किया जाता है।

कोंध जनजाति के मान्यतायें एवं देवी–देवता :

कोंध जनजाति में संगोत्री विवाह वर्जित है। विवाह लड़की की समहति से किया जाता है। इनमें वधुमूल्य अनिवार्य रूप से अदा की जाती है। इनमें विधवा विवाह मान्य है। कोंध जनजाति में जादू, तंत्र–मंत्र, टोना–टोटका आदि उनके जीवन के महत्वपूर्ण अंग है। बैगा(गुनिया) द्वारा किसी भी प्रकार के रोग या अस्वस्थ होने पर जादुई–धार्मिक कर्मकाण्डीय, झाड़–फूंक एवं वनौषधियों आदि विधियों से उपचार करता है। समुदाय शुभ एवं अशुभ विचारों में भी विष्वास करती है।

कोंध जनजाति का धर्म प्रकषति, अलौकिक शक्ति, आत्मा तथा प्राकृतिक देवी–देवताओं के विश्वास पर आधारित है। वे इन षक्तियों के समक्ष समर्पण कर अपने प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य की पूर्णता हेतु कामना करते है। कार्य सिद्ध होने पर अपने पारंपरिक रीति–रिवाजों, मान्यताओं व विश्वासों के आधार पर देवी–देवताओं की पूजा अर्चना, लोकगीत–नृत्य एवं पशुओं की बलि भेंट आदि कर उनका कृतज्ञता ज्ञापित करते है। इनमें मुख्यतः धरणी देवी, ठाकूर देव, समलाई माता, पररोंल, द्वारसेनी, गोररिया एवं बघिया आदि 84 प्रकार के देवी–देवताये पाये जाते है। समुदाय में महुआ जात्रा, चावल जात्रा, अक्ती, हरेली, पोला, नवाखाई, कर्मा एवं सोहराई आदि त्यौहारों के साथ–साथ हिन्दू त्यौहारों को भी हर्षोल्लास से मनाते है।

परम्परागत स्वच्छता एवं सफाईः

कोंध जनजाति में परम्परागत स्वच्छता एवं सफाई का दायित्व महिलाओं का होता है। वष्व के लगभग सभी जनजातीय समाजों में सामाजिक संरचना एवं सामाजिक व्यवस्था के संचालन हेतु विषिश्ट प्रणाली विद्यमान है। जनजातीय समाजों में प्रथागत व्यवहारों का अनुपालन सभ्य समाजों की अपेक्षा अधिक कठोर रूप से किया जाता है। उनकी सामाजिक व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति का एक निश्चित स्थान होता है, तथा उसी के अनुरूप व्यक्ति को भूमिका का निर्वहन करना होता है। ये अपनी समस्याओं को परम्परा एवं प्रथानुसार समाधान भी करते है। आदिवासियों में लोक परम्परा आदिकाल से चली आ रही है। प्रत्येक आदिवासी समुदाय की लोक परम्पराओं में अपनी–अपनी विषेशताएं होती है। ये परम्परा सदियॉ पुरानी है, ये ही आदिवासी संस्कृति में निखार लाती है, आदिवासी संस्कृति कला, साहित्य, पोशाक, रंग, नृत्य, संगीत व्यवहार आदि विविध पक्षों से जुड़ी हुई होती है। इन सभी का लोक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है, और ये प्रभाव ही आदिवासी संस्कृति को रंगते गये, और विभिन्न छाप छोड़ते गये । जिन्हें प्रामाणिक माना जाता रहा है। इस दृष्टि से आदिवासी लोक परम्पराएं जीवन्त है। इनकी लोक परम्पराएं ऐतिहासिक और सामाजिक विरासत को केवल बनाए ही नही रखती, बल्कि समय और परिस्थिति के अनुरूप इसे स्पष्ट करने का भी कार्य करती है। लोक परम्पराएं अपनी सतत् निरन्तरता की प्रकृति के कारण सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने तथा समाज को संगठित बनाये रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है।

इस समुदाय की महिलाएं विशिष्ट अवसरों, त्यौहारों व विशेष संस्कारों जैसेः– जन्म, विवाह एवं मृत्यु आदि के समय **"छुही (सफेद मिट्टी)"** से घरों की लिपाई–पुताई करती

है। विशेष काली मिट्टी से दीवारों में कलात्मक छपाई भी करती है। घर, बरामदा एवं ऑगन आदि के फर्श को गोबर पानी एवं पैरा की राख को मिलाकर लिपाई भी करती है। समुदाय के वृद्ध महिला एवं पुरूष शरीर एवं बाल धोने हेतु चिकनी मिट्टी का उपयोग करते है।

लोक रंग :

कोंध जनजाति में रंगों का विशेष महत्व होता है। कोंध जनजाति के संस्कारों की पवित्रता एवं वचनबद्धता भी इनके जीवनशैली के रंग ही है। प्रकृति के ऊपर अटुट विश्वास, अलौकिक शक्ति, जादू–टोना, भूत–प्रेत, शुभ–अशुभ का विचार भी लोक संस्कृति के अंग है। इस जनजाति के सदस्य विशेष अवसरों, त्यौहारों, लोकगीतों एवं नष्त्य के समय विशेष गहरे रंग के परिधान को महत्व देते है। लोकनृत्य के समय महिलायें गहरा नीला या हरा रंग के लुगड़ी एवं गले में सफेद कौड़ी की मनखा पहनती है, जबकि पुरूष गहरा नीला या हरा रंग के लंगोटी सफेद बनियान एवं पगड़ी पर सिलयारी घास के फूल पहने विशिष्ट श्रृंगार किये होते है।

पोशाक एवं आभूषणः

कोंध समुदाय के वयस्क पुरूष 'लंगोटी (पोटका)' पहनते है एवं सिर पर गमछा की पगड़ी बांधते है। वहीं महिलाएं घुटने के नीचे तक रंग–बिरंगी 'साड़ी व ब्लाउज' भी पहनती है। जबकि वृद्ध महिलाएं 'लुगड़ी' पहनती है और शरीर के उपरी भाग को लुगड़ी की पल्लू से ढकी रहती है। साज श्रृंगार एवं आभूशण में महिलाएं गले में चांदी की सुता अथवा कलदार, कान में ढ़ार, करछी, बाजू में बहुटा या नागमोरी, कलाई में ककनी, कमर में करधनी, पैर में चुड़ा (पायल), पैरों की उंगली में चुटका एवं हाथ की उंगलीयों में मुंदरी पहनती है। इनके आभूषण चांदी अथवा गिलट की बनी हुई होती है। इस जनजाति में गोदना को पवित्र तथा आवश्यक माना जाता है। यह समुदाय गोदना को पक्का एवं स्थायी श्रृंगार मानती है। महिलाएं प्रायः बाजुओं में ''बिच्छू'' हथेलियों में ''डोरा'' घुटने के ऊपर ''पीपल का पत्ता'' उल्टे हथेली में खरगोश के तलवे की आकृति एवं पैर के पंजे के ऊपर ''बिन्दी, फूल, नाग'' आदि आकृतियां गुदवाती है।

कोंध जनजाति के लोक कलाः

कोंध जनजाति की लोककला अधिक सृजनात्मक और स्वतंत्र कला है, जो अन्य आदिवासी समूह के लोक–कलाओं से पृथक पहचानी जाती है। इनके कला के पीछे अनेक पीढ़ियों का अनुभव तथा सामाजिक अभिमति होती है। इनकी कला में अनुष्ठान, धर्म, पर्व, उत्सव, टोने–टोटके और सामाजिक प्रंसगों के विशय सम्मिलित होते है। उनके हस्तशिल्प, कताई–बुनाई के वस्त्र भी उनकी कला का एक रूप है। लकड़ी पर बनाये जाने वाले रूपाकार कला भी ज्यामीतिय होते है। बांस एवं घास के सामान में भी विविध अमूर्त एवं ज्यामितीय प्रतिमान होते है। साथ ही सर्वाधिक सहज और तत्काल स्फूरित कला का रूप भित्ती चित्रण परम्परा है। जिसमें सभी प्रकार के आकार और अभिप्राय चित्रित किये जाते है।

कोंध जनजाति केलोकोक्तियॉ एवं कहावत

कोंध समुदाय में विभिन्न प्रकार की लोकोक्तियॉ एवं कहावते प्रचलित है। इनके लोकोक्तियॉ लोक इतिहास की छोटी–छोटी गागरें होती है। जिसमें समुदाय का अनुभव भरा रहता

है। ये लोकोक्तियॉ व कहावतें उनके दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी हुई होती है, जिसे लम्बे समय से जन समुदाय द्वारा बोलचाल के समय उपयोग किया जाता रहा है। ये लोकोक्तियॉ एवं कहावतें वार्तालाप के समय अपनी बात को सटीक एवं संक्षिप्त रूप में व्यक्त करने में मदद करती है। कोंध समुदाय की कुछ कहावतें एवं लोकोक्तियॉ निम्नानुसार हैः–

1. सावन के खेती अदखन, आषाढ़ खेती संचार।

भावार्थ :–आषाढ़ माह में खेती करने से फसल अच्छी होती है, और सावन माह में फसल पिछड़ने से बीमारी आदि से ग्रसित हो जाती है।

2. लरक–कचक बोय किसान, जेकर उपजे ते सियान।

भावार्थ:–सभी किसान अपने–अपने खेतों में फसल लगाते है, लेकिन जिसकी फसल अच्छी होती है, वही होशियार किसान कहलाता है।

3. आषाढ़, सावन गौतरी करें, कार्तिक में खेले जुआ,
पारा–परोस मन पूछे लगीन कतक धान लुआ।

भावार्थ:–जो व्यक्ति खेती करने के समय अर्थात आषाढ़–सावन माह में घूमता–फिरता है तथा कार्तिक माह में जुआ खेलता है। फसल कटाई के समय आस–पास के लोग पूछने लगे कि इस वर्ष कितनी फसल काटे हो।

वर्तमान परिवेश में कोंध समुदाय दुविधा की स्थिति में है। एक तरफ इनके सामने आधुनिक सभ्यता, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, अन्य समाज के प्रभाव एवं बदलते हुए विकास के आयाम है, तो दूसरी तरफ उनकी सांस्कृतिक धरोहर, परम्पराएं एवं रीति–रिवाज है। शिक्षा, यातायात, संचार के साधन, टेलीविजन एवं मीडिया आदि के प्रभाव से अब कोई भी समाज अछूता नही है। यद्यपि आदिम समाजों की अपेक्षा सभ्य समाजों में परिवर्तन की गति तीव्र रही है। फिर भी परिवर्तन कोंध समुदाय को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जिसके परिणामस्वरूप इनके सामाजिक–धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों की नवीन दिशायें खुलते जा रहे है।

संदर्भ

1- Russell, R. V. and R. B.Hiralal ; The Tribes and Castes of the central Provices of India, vol. III macmillan and co.Ltd, London-1916

2- Sharma, Krishna; The Kondhs of Orissa : An Anthropometry Study, Concept Publishing Company, New Delhi-1979

3- Ray, B.C., Tribal of Orissa, the Changing socio-Economic Profile. ed Bhagaban Sahu; The Practice of infanticide among the Khonds of Orissa, Gain Publishing House, New Delhi-1989

4- Patnaik, N. R.; History and culture of Khonds tribes, comman wealth Publishers, New Delhi -1992

5- Singh, K.S.; People of India, National Series vol. III The Scheduled Tribe, Oxfort University Press, Culcutta -1994

6. *चतुर्वेदी, गिरिश कुमार; ब्रज की लोक संस्कृति, प्रकाशक–कत्यतरू, दिल्ली–1998*

7- *Gurulingaiah, M.; Tribal Culture : Chance and Mobility, Anmol Publication Pvt. Ltd, New Delhi- 2007*

8. *गुलाब राम पटेल, कोंध जनजाति का नृजातीय अध्ययन प्रतिवेदन, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर – 2015*

9- www. odisha.gov.in/.../88-98. Mahananda, Ramakant pdf-2015